॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

# ॥ श्री रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् ॥

# विषय सूची


॥अथ श्री रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् ॥ ..... 3

॥ प्रथम सर्ग ॥ ..... 5

॥ द्वितीय सर्ग ॥ ..... 10

॥ तृतीय सर्ग ॥ ..... 12

॥ चतुर्थ सर्ग ॥ ..... 14

॥ पंचम सर्ग ॥ ..... 40

॥ शांतिपाठ॥ ..... 49

॥ श्री हरि ॥

# ॥अथ श्री रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् ॥

श्रीरामतापनीयार्थं भक्तध्येयकलेवरम् ।
विकलेवरकैवल्यं श्रीरामब्रह्म मे गतिः ॥

श्रीरामतापिनीयोपनिषद् यर्थाथ में भक्तों के लिए ध्यान का विषय है (कारण श्रीराम तत्त्व का इसमें ज्ञान होता है) जो प्राकृत शरीर से रहित है, जो कैवल्य परमपद है, जो परमब्रह्म है। वही श्रीराम मेरे आश्रय हैं और मेरी गति हैं।

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

गुरु के यहाँ अध्ययन करने वाले शिष्य अपने गुरु, सहपाठी तथा मानव मात्र का कल्याण-चिन्तन करते हुए देवताओं से प्रार्थना करते है कि:

हे देवगण ! हम भगवान का आराधन करते हुए कानों से कल्याण मय वचन सुनें। नेत्रों से कल्याण ही देखें। सुदृढः अंगों एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए हम लोग; जो आयु आराध्य देव परमात्मा के काम आ सके, उसका उपभोग करें।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

जिनका सुयश सभी ओर फैला हुआ है, वह इन्द्रदेव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, हमारे जीवन से अरिष्टों को मिटाने के लिए चक्र सदृश्य, शक्तिशाली गरुड़देव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पति भी हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हमारे, अधिभौतिक, अधिदैविक तथा तथा आध्यात्मिक तापों (दुखों) की शांति हो।

॥ श्री हरि ॥

# ॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

## ॥ प्रथम सर्ग ॥

### रामनाम के विविध अर्थ, उनका साकार रूप, मन्त्र एवं यन्त्र का महातम्य

ॐ चिन्मयेऽस्मिन्महाविष्णौ जाते दशरथे हरौ ।
रघोः कुलेऽखिलं राति राजते यो महीस्थितः ॥ १॥

ॐ Lचिन्मय (शुद्ध ज्ञान) रूप महाविष्णु जब दशरथ के घर रघुकुल में अवतार लिये उस समय उनका नाम राम हुआ (इस नाम की उत्पत्ति इस प्रकार है- जो पृथ्वी पर स्थित होकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हैं और राजा के रूप में स्थित हैं- वे राम हैं। 'राति राजते योमहीस्थित:'- राति का पहला अक्षर 'रा' एवं महिस्थित का पहला अक्षर 'म' से राम बना है।) ॥१॥

स राम इति लोकेषु विद्वद्भिः प्रकटीकृतः ।
राक्षसा येन मरणं यान्ति स्वोद्रेकतोऽथवा ॥ २॥

विद्वानों ने यह प्रकट किया है कि वो ही राम हैं (चाहे उस शब्द की उत्पत्ति का कोई भी कारण हो) जिनके द्वारा राक्षस मारे गये। ('राक्षस

येन मरणं' के राक्षस शब्द के पहले अक्षर 'रा' तथा मरणं शब्द के पहले अक्षर 'म' को जोड़ने पर 'राम' बना।) (२)

रामनाम भुवि ख्यातमभिरामेण वा पुनः ।
राक्षसान्मर्त्यरूपेण राहुर्मनसिजं यथा ॥ ३॥

प्रभाहीनांस्तथा कृत्वा राज्यार्हाणां महीभृताम् ।
धर्ममार्गं चरित्रेण ज्ञानमार्गं च नामतः ॥ ४॥

वे सबके मन को अभिराम (प्रसन्नता, हष) देने वाले, सुन्दर शरीर वाले होने से पृथ्वी पर 'राम' कहलाये। अथवा जो मनुष्य रूप होकर भी राक्षसों को उसी प्रकार मलीन कर देते हैं जैसे राहु चन्द्रमा को, वो 'राम' कहलाये। अथवा जो अपने आदर्श चरित्र के उदाहरण से राजा लोगों को सत्यपथ (धर्मपथ) पर चलने की शिक्षा देते हैं, नाम जप करने पर ज्ञान मार्ग की प्राप्ति कराते हैं। ॥३-४॥

तथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं स्वस्य पूजनात् ।
तथा रात्यस्य रामाख्या भुवि स्यादथ तत्त्वतः ॥ ५॥

अपना ध्यान करने पर भक्तों को वैराग्य देते हैं, अपने विग्रह की पूजा करने पर ऐश्वर्य देते हैं। उनका नाम पृथ्वी पर 'राम' नाम में विख्यात है। यह यथार्थ है। ॥५॥

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि ।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ ६॥

योगीजन जिन नित्यानन्द, चिदात्मा परमात्मा में रमण करते हैं, वे ही राम पद से जाने जाते हैं। वे जो. परम पद हैं, ब्रह्म की प्रार्थना से अवतार धारण किये इसलिए 'अवतारी राम' एवं 'परमब्रह्म एक ही है। ॥६॥

चिन्मयस्याद्वितीयस्य निष्कलस्याशरीरिणः ।
उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना ॥ ७॥

ब्रह्म चिन्मय, अद्वितीय, निष्कलंक, पञ्च भौतिक शरीर से रहित है। वो ही ब्रह्म अपनी उपासना करने वाले भक्तों के लिए कल्पितरूप धारण कर मनुष्य रूप में अवतार लेते हैं। ॥७॥

रूपस्थानां देवतानां पुंस्त्र्यङ्गास्त्रादिकल्पना ।
द्वित्तत्वारिषडष्टानां दश द्वादश षोडश ॥ ८॥

अष्टादशामी कथिता हस्ताः शङ्खादिभिर्युताः ।
सहस्रान्तास्तथा तासां वर्णवाहनकल्पना ॥ ९॥

जो परमात्मा राम के रूप में देह धारण किये हैं उन्हीं की पुरूष, स्त्री, अंग और अस्त्र आदि के रूप में कल्पना की जाती है। जितने देवता हैं वे सब उस परमात्मा में स्थित हैं (अथवा वो परमात्मा के ही भिन्न रूप हैं) अतः वे भिन्न-भिन्न शस्त्र वगैरह का रूप धारण कर उनकी सेवा करते हैं पर उनसे (राम से) भिन्न / पृथक नहीं है। परमात्मा ब्रह्म जो रूप धारण करते हैं उनमें किसी में दो, किसी में चार, आठ, दस, बारह, सोलह, अट्ठारह- इतने हाथ कहे गये हैं। उनके हाथों में शंख आदि सुशोभित हैं। जब वे विराट पुरूष (विश्व रूप) धारण करते

हैं तो उनके सहस्रों हाथ हो जाते हैं। उन भिन्न रूपों के भिन्न-भिन्न रंग एवं वाहन आदि की कल्पना की गयी है। ॥८-९॥

शक्तिसेनाकल्पना च ब्रह्मण्येवं हि पञ्चधा ।
कल्पितस्य शरीरस्य तस्य सेनादिकल्पना ॥ १०॥

उन परम ब्रह्म के लिए नाना प्रकार की शक्तियाँ एवं सेना आदि की सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है। इस प्रकार उस निर्विकल्प परब्रह्म में पंच विधि शरीर की (जैसे विष्णु, शिव, ब्रह्मा, दुर्गा, गणेश, सूर्य आदि) मात्र कल्पना ही है। फिर उनके लिए सेना इत्यादि की कल्पना होती है। ॥१०॥

ब्रह्मादीनां वाचकोऽयं मन्त्रोऽन्वर्थादिसंज्ञकः ।
जप्तव्यो मन्त्रिणा नैवं विना देवः प्रसीदति ॥ ११॥

अत:, ब्रह्म से लेकर सृष्टि के अंत तक जितने जड़ चेतन हैं उनका सबका वाचक 'राम' शब्द (मन्त्र) हैं। जैसा इसका अर्थ है वैसा प्रभाव भी है। अतः इस राम मन्त्र को सर्वोपरि जान, इसकी दीक्षा ले इसका जाप करना चाहिए। इसके बिना परम ब्रह्म की प्रसन्नता नहीं हो सकती। चूंकि यह सभी देवताओं का वाचक है, अत: मात्र इसके जप करने से सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। ॥११॥

क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामर्थं मन्त्रो वदत्यथ ।
मननान्त्राणनान्मन्त्रः सर्ववाच्यस्य वाचकः ॥ १२॥

साधक जो क्रिया, कर्म इत्यादि करता है उसका अर्थ (अभिष्ट प्रयोजन) एवं स्वरूप मन्त्र बतला देता है, निश्चित कर देता है।

जिसका मनन, चिंतन करने से रक्षा हो वह मंत्र कहलाता है। यह मंत्र राम सभी वाच्यों (अर्थ, अभिप्राय, कथनीय) का भी वाचक है। ॥१२॥

सोऽभयस्यास्य देवस्य विग्रहो यन्त्रकल्पना ।
विना यन्त्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति ॥ १३॥

जो ब्रह्म उभय रूप में विराजमान है- निर्गुण एवं शरीरधारी राम के रूप में उनका दोनों का वाचक राम मन्त्र है और जैसे सगुण भगवान की पूजा उनके विग्रह के माध्यम से होती है उसी प्रकार निर्गुण भगवान की पूजा मन्त्र-यन्त्र से होती है। बिना यन्त्र की पूजा से वह चैतन्य प्रभु प्रसन्न नहीं होते ॥१२॥

॥ इति रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् प्रथम सर्ग ॥ ॥ १॥

श्रीरामपूर्वतापिनीयोपनिषद् का प्रथम सर्ग समाप्त हुआ।

॥ श्री हरि ॥

# ॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

## ॥ द्वितीय सर्ग ॥

श्रीराम का स्वरूप एवं राम के बीज मन्त्र का अर्थ

स्वर्भूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपी स्वेनैव भासते ।
जीवत्वेन समो यस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च ॥१॥

वह (श्रीराम) कारण रहित हैं एवं कारण की अपेक्षा न रखकर स्वयं प्रकट होते हैं। इसलिए 'स्वयंभू' कहलाये। उनका स्वरूप चिन्मय, प्रकाशमय है। वे रूपधारक होते हुए भी अनन्त हैं। (अर्थात् देश, काल, वस्तु से परे हैं।) वे अपने ही स्वप्रज्जवलित ज्योति से प्रकाशमान हैं। वे जीव की आत्मा के रूप में उसमें प्रतिष्ठित हैं। वे ही सृष्टि, स्थित और लय के कारण हैं। ॥१॥

कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजःसत्त्वतमोगुणैः ।
यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महान्द्रुमः ॥२॥

इसके लिए वे अपनी चित्त शक्ति के द्वारा रजोगुण, शतोगुण तथा तमोगुण का प्रयोग करते हैं। वे सृष्टि में उसी प्रकार स्थित हैं जैसे की एक बहुत बड़ा बट का पेड़ एक छोटे से बीज में अदृश्य रूप में स्थित रहता है। ॥२॥

तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ।
रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव चेति ॥ ३॥

उसी प्रकार यह सृष्टि, चराचर जगत, भी राम नामक बीज में स्थित हैं। सृष्टि के कारण ब्रह्मा, पालन के कारण विष्णु तथा लय के कारण शिव- यह तीनों मूर्तियाँ (देव) राम मन्त्र के 'र'-कार पर आरूढ़ हैं। उसी प्रकार तीनों शक्तियाँ जो निर्माण, स्थित एवं लय का कारण हैं- वो भी राम के बीज 'र' पर आरूढ़ हैं। ॥३॥

राम शब्द का अक्षर विभाग निम्न है- र, आ, अ, म्। इनमें 'र' तो साक्षात् राम का वाचक है, 'आ' ब्रह्मा का, 'अ' विष्णु का एवं 'म' शंकर का वाचक है। उनके कार्य की. जरूरत के अनुसार तीनों शक्तियों का क्रमशः वाचक है।

॥ इति रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् द्वितीय सर्ग ॥ ॥ १॥

श्रीरामपूर्वतापिनीयोपनिषद् का द्वितीय सर्ग समाप्त हुआ।

॥ श्री हरि ॥

# ॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

## ॥ तृतीय सर्ग ॥

श्रीराम में पूरी सृष्टि का समाहित होना

सीतारामौ तन्मयावत्र पूज्यौ जातान्याभ्यां भुवनानि द्विसप्त ।
स्थितानि च प्रहितान्येव तेषु ततो रामो मानवो माययाधात् ॥ १॥

इस बीज मन्त्र में पुरूष-प्रकृति रूप में राम एवं सीता (यानि की सीताराम) स्थित हैं। उन्हीं से यह १४. भुवन प्रकाशित (पैदा) हुए हैं। इन दोनों में सृष्टि स्थित है तथा पैदा और लय भी हो जाती है। अत: राम ने माया के माध्यम से इस सृष्टि को भी रचा एवं मनुष्य रूप भी धारण किया। ॥१॥

१४ भुवनों के नाम: ७ ऊर्ध्व लोक--(१) भू:, (२) भुवः, (३) स्वः, (४) महः, (५) जनः, (६) तपः, (७) सत्यम एवं ७ अध: लोक--(८) अतल, (९) वितल, (१०) सुतल, (११) रसातल, (१२) तलातल, (१३) महातल, (१४) पाताल।]

जगत्प्राणायात्मनेऽस्मै नमः स्या न्नमस्त्वैक्यं प्रवदेत्प्राग्गुणेनेति ॥ २॥

इस सृष्टि को रचकर वे उसमें प्राण रूप में प्रविष्ट कर गये। ऐसे श्रीराम को बारम्बार नमस्कार है, प्रणाम है। पूरी सृष्टि उनका शरीर है। यह समझा जाय एवं इस ज्ञान से सम्पन्न होकर यह समझा जाय कि 'मेरे और परमब्रह्म राम में कोई भेद नहीं है, हम एक ही हैं'। ॥२॥

॥ इति रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् तृतीय सर्ग ॥ ॥३॥

श्रीरामपूर्वतापिनीयोपनिषद् का तृतीय सर्ग समाप्त हुआ।

॥ श्री हरि ॥

# ॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

## ॥ चतुर्थ सर्ग ॥

श्रीराम के मन्त्र का विस्तृत अर्थ; जाप एवं ध्यान का विधान; संक्षिप्त राम कथा

जीववाची नमो नाम चात्मारामेति गीयते ।
तदात्मिका या चतुर्थी तथा मायेति गीयते ॥१॥

जीव वाची जो शब्द है वो नमन (नमः) करता है चिदात्मा वाची राम शब्द को यानि कि जीव राम  का सेवक है। ना कि राम जीव का। जीव राम में एवं राम जीव में रमण करते हैं। 'रामाय' शब्द के दो भाग राम एवं आय से क्रमशः परमात्मा एवं जीव के एक होना बतलाया गया है ॥१॥

मन्त्रोयं वाचको रामो रामो वाच्यः स्याद्योगएतयोः ।
फलतश्चैव सर्वेषां साधकानां न संशयः ॥ २॥

'रां रामाय नमः'  यह मन्त्र है जो बोला जाता है (वाचक है) और राम इस मन्त्र के वाच्य (उद्देश्य) हैं। इन दोनों का संयोग मंत्र का जाप और लक्ष्य पर केंद्रित ध्यान साधक को अभिष्ठ फल प्रदान करने वाला है। इसमें कोई संदेह नहीं हैं। ॥२॥

यथा नामी वाचकेन नाम्ना योऽभिमुखो भवेत् ।
तथा बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुखो भवेत् ॥ ३॥

जो व्यक्ति का नाम होता है। उसको पुकारने से वह सामने आ जाता है। इसी प्रकार राम के बीज मंत्र 'राम् या रा' को समझना चाहिए। यानि कि राम मन्त्र जपने वाले के सम्मुख भगवान् राम आ जाते हैं। ॥३॥

बीजशक्तिं न्यसेद्दक्षवामयोः स्तनयोरपि ।
कीलो मध्ये विना भाव्यः स्ववाञ्छाविनियोगवान् ॥ ४॥

साधक को चाहिए कि बीज मंत्र (रामाय) के 'रा या रां' बीज का दाहिना स्तन पर, 'मा' शक्ति का बाएं स्तन पर और 'य' कीलक का मध्य स्थल अर्थात हृदय पर न्यास करे। इसके साथ ही साधक अपनी इच्छा पूर्ति के लिए इस मंत्र का विनियोग करे। ॥४॥

सर्वेषामेव मन्त्राणामेष साधारणः क्रमः ।
अत्र रामोऽनन्तरूपस्तेजसा वह्निना समः ॥ ५॥

सभी मन्त्रों का यही क्रम होता है- पहले बीज, फिर शक्ति, फिर कीलक का न्यास करना और फिर अंत में अपने मनोरथ सिद्धि का विनियोग करना है। ध्यान करना चाहिए कि जो राम है वह परब्रह्म, अनन्त, अविनाशी परमात्मा हैं एवं तेज में अग्नि के समान है ॥५॥

सत्त्वनुष्णगुविश्वश्चेदग्नीषोमात्मकं जगत् ।
उत्पन्नः सीतया भाति चन्द्रश्चन्द्रिकया यथा ॥ ६॥

श्रीराम अग्नि के समान तेज होने पर भी सौम्य शीतल किरण वाले हैं। (यानि कि प्रचण्ड तेज युक्त होने पर भी शीतलता प्रदान करते है) जब उनका संयोग शीतल कान्ति वाली सीता से होता है तो अग्नि सोमात्मक जगत (स्त्री एवं पुरुष रूप) की उत्पत्ति होती है। श्रीराम सीता के साथ उसी प्रकार शोभा प्राप्त करते हैं जैसे चंद्रमा चंद्रिका के साथ। ॥६॥

नोट : रा शब्द वैश्वानर अग्नि का प्रतीक है एवं मा शब्द चन्द्रमा का प्रतीक है। अतः रा+म से अग्निषोमात्मक, यानि तेज एवं शीतलता के संयोग का जगत यह अर्थ बनता है।

प्रकृत्या सहितः श्यामः पीतवासा जटाधरः ।
द्विभुजः कुण्डली रत्नमाली धीरो धनुर्धरः ॥ ७॥

साधक श्रीराम का ध्यान करे- श्रीराम अपने प्रकृति, आद्य शक्ति (सीता) के साथ विराजमान है। उनका वर्ण श्याम है, वे पीताम्बर धारण किये हैं, सिर पर जटा है, दो भुजायें हैं, कानों में कुण्डल हैं, गले में रत्नो की माला है, वे धीर (निर्भय, गम्भीर) हैं एवं धनुष लिये हुए हैं। ॥७॥

प्रसन्नवदनो जेता घृष्ट्यष्टकविभूषितः ।
प्रकृत्या परमेश्वर्या जगद्योन्याङ्किताङ्कभृत् ॥ ८॥

श्री राम प्रसन्नमुख हैं, संसार विजयी हैं, आठ सिद्धियों से युक्त हैं। संसार के कारण मूल प्रकृति के रूप में परमेश्वरी (सीता) उनके बांयी तरफ विराजमान ॥८॥

आठ सिद्धियाँ हैं:-

(१) अणिमा- इतना सूक्ष्म बन जाना कि दिखायी न पड़े।
(२) महिमा- अपनी शक्ति को इच्छानुसार बढ़ाने की क्षमता; महत्व, गौरव, बड़ाई।
(३) गरिमा- अपने वजन को बढ़ाने की क्षमता; भारी, वजनीय, गरू।
(४) लघिमा- अपने को  हल्का बनाने कि क्षमता
(५) प्राप्ति -सब कुछ प्राप्त कर लेने की क्षमता
(६) प्राकाम्य -  बल, उद्योग, शक्तिशाली होना
(७) ईशत्व – सब पर स्वामी मालिक होने कि क्षमता
(८) वशित्व – सबको वश में कर लेने कि क्षमता।

हेमाभया द्विभुजया सर्वालङ्कृतया चिता ।
श्लिष्टः कमलधारिण्या पुष्टः कोसलजात्मजः ॥ ९॥

सीता के अंगों की कान्ति सोने के समान गौर वर्ण है। उनकी भी दो भुजायें हैं, वे समस्त आभूषणों से विभूषित है एवं हाथ में कमल लिए हुए हैं, उनके साथ बैठे हुए कौशल नंदन श्री राम बड़े प्रसन्न दिखाई देते हैं। ॥९॥

दक्षिणे लक्ष्मणेनाथ सधनुष्पाणिना पुनः ।

हेमाभेनानुजेनैव तथा कोणत्रयं भवेत् ॥ १०॥

उनके (श्रीराम के) दक्षिण भाग (सामने) में लक्ष्मणजी खड़े हैं। उनका वर्ण एवं कान्ति सोने के समान गोरा है। वे हाथ में धनुष बाण धारण किये हुए हैं। उस समय राम, लक्ष्मण एवं सीता का एक त्रिकोण जैसा बन जाता है ॥१०॥

तथैव तस्य मन्त्रस्य यस्याणुश्च स्वडेन्तया ।
एवं त्रिकोणरूपं स्यात्तं देवा ये समाययुः ॥ ११॥

इस प्रकार जो राम का मन्त्र 'रा रामाय नमः' है उसके तीन शब्द-रां जो परमात्मा का बीज है, रामाय जो परमात्मा तथा जीव की एकता बताता है एवं नमः जो जीव का प्रतीक है-क्रमशः श्रीराम, सीता एवं लक्ष्मण के द्योतक हैं। अतः इस मन्त्र के भी एक त्रिकोण बनता है। एक बार इस मन्त्र रूपी त्रिकोण में विराजमान रामजी से मिलने देवतागण आये। ॥११॥

स्तुतिं चक्रुश्च जगतः पतिं कल्पतरौ स्थितम् ।
कामरूपाय रामाय नमो मायामयाय च ॥ १२॥

तब उन देवताओं ने उन जगतपति की-जो रत्न के सिंहासन पर कल्पतरू के नीचे विराजमान थे-स्तुति की, 'काम' के समान सुन्दर, अथवा कामरूपधारी, एवं माया शरीर धारण करने वाले श्रीराम को नमस्कार है। ॥१२॥

नमो वेदादिरूपाय ओङ्काराय नमो नमः ।

रमाधराय रामाय श्रीरामायात्ममूर्तये ॥ १३॥

जो वेदों के रूप हैं, जो ॐकार स्वरूप हैं (अथवा जो ॐकार स्वरूप के आदिकारण हैं जिसके बाद वेद प्रकट हुए) उनको नमस्कार है। उन्होंने रमा (सीता, लक्ष्मी) को धारण कर रखा है (यानि की सीता उनके बायीं तरफ विराजमान हैं), जो परमात्मा जीव में रमण करते हैं एवं जो राम आत्मस्वरूप हैं, आत्मा की मूर्ति हैं अथवा परमात्मा शरीर रूप में हैं। ॥१३॥

जानकीदेहभूषाय रक्षोघ्नाय शुभाङ्गिने ।
भद्राय रघुवीराय दशास्यान्तकरूपिणे ॥ १४॥

जानकी (लक्ष्मी) जिनका आभूषण हैं (यानि कि लक्ष्मी के पति होने के कारण उनका संग पाकर बिना किसी बाहरी आवण्डर के भी विश्व में सबसे ज्यादा सजे हुए माने जाते हैं), जिन्होंने राक्षसों का नाश किया, जिनका शरीर मंगल मय है, जो दशानन (रावण) का अन्त करने वाले काल के समान है- वही रघुकुल के राजा श्रीमान् राम हैं। ॥१४॥

रामभद्र महेश्वास रघुवीर नृपोत्तम ।
भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते ॥ १५॥

हे रामभद्र! हे महा धनुरंधर! हे रघुवीर! हे नृपश्रेष्ठ! हे दशानन (रावण) को मारने वाले! आप हमारी रक्षा करें। आप हमें ऐसी 'श्री' (सम्पदा) दें जिसका सम्बन्ध आपसे हो- अर्थात् जो भगवत् प्राप्ति के उपाय में लग सके। ॥१५॥

त्वमैश्वर्यं दापयाथ सम्प्रत्याश्वरिमारणम् ।
कुर्विति स्तुत्य देवाद्यास्तेन सार्धं सुखं स्थिताः ॥ १६॥

देवता आगे बोले-आप हमें ऐश्वर्य प्रदान करें और शीघ्र ही राक्षस (रावण) को मारने की व्यवस्था करें। ऐसी स्तुति करके देवता एवं सिद्धगण सुख से (यानि निश्चिन्त होकर) राम के सामने स्थित हो गये। ॥१६॥

स्तुवन्त्येवं हि ऋषयस्तदा रावण आसुरः ।
रामपत्नीं वनस्थां यः स्वनिवृत्त्यर्थमाददे ॥ १७॥

देवताओं के समानऋषियों ने भी राम की स्तुति की। इधर असुर रावण ने वन में स्वयं के विनाश हेतु राम की पत्नी (सीता) को वन में (या 'वन से') हर लिया जहाँ वे उस समय रहती थीं। ॥१७॥

स रावण इति ख्यातो यद्वा रावाच्च रावणः ।
तद्व्याजेनेक्षितुं सीतां रामो लक्ष्मण एव च ॥ १८॥

राम (या राम पत्नी) के 'रा' शब्द से एवं वनस्थां (पद संख्या १७) के 'वन' शब्द से वह राक्षस "रावण = रावण' नाम से प्रसिद्ध हुआ। अथवा जो दूसरों को रूदन करवाता है अथवा रूलवाता है। वह रावण कहलाया। कारण उसने सीता को त्रास देकर रूलाया था। अथवा जो बहुत 'र व' (यानि कि हल्ला-गुल्ला, शोर) करता है वह रावण कहलाया। इसके बाद श्रीराम एवं लक्ष्मण ने सीता की खोज में। ॥१८॥

विचेरतुस्तदा भूमौ देवीं संदृश्य चासुरम् ।

हत्वा कबन्धं शबरीं गत्वा तस्याज्ञया तया ॥ १९॥

वह देवी सीता की खोज में वन प्रांत में भूमि पर विचारने लगे। आगे कबंध नामक असुर को देखकर उन्होंने उसे मार डाला। इसके बाद वे शबरी के यहाँ गये। ॥१९॥

पूजितो वायुपुत्रेण भक्तेन च कपीश्वरम् ।
आहूय शंसतां सर्वमाद्यन्तं रामलक्ष्मणौ ॥ २०॥

शबरी ने बड़ी भक्ति भावना से उनकी पूजा की। तदन्तर आगे जाने पर उन्हें वीर पुत्र (हनुमान) मिले। उन्होंने मध्यस्थ होकर कपीराज (सुग्रीव) से राम-लक्ष्मण की मित्रता करायी। फिर उन्होंने सुग्रीव से आदि से अंत तक का पूरा वृतांत कह दिया। ॥२०॥

स तु रामे शङ्कितः सन्प्रत्ययार्थं च दुन्दुभेः ।
विग्रहं दर्शयामास यो रामस्तमचिक्षिपत् ॥ २१॥

उसे (सुग्रीव को) राम के ऐश्वर्य एवं सामर्थ्य पर शंका थी। इसलिए उसने उन्हें दुंदुभि नामक राक्षस का विशाल शरीर दिखाया जिसे श्री राम ने अपने पैर के अंगूठे से अनायास ही दस योजन दूर फैंक दिया । ॥२१॥

सप्त सालान्विभिद्याशु मोदते राघवस्तदा ।
तेन हृष्टः कपीन्द्रोऽसौ स रामस्तस्य पत्तनम् ॥ २२॥

परंतु सुग्रीव जी शंका तब भी निर्मूल नहीं हुई तब श्री राम ने एक बयान से ताल से सात पेड़ों को बींध डाल जिससे कपिन्द्र (सुग्रीव)

को हर्ष हुआ। अपने मित्र को खुश देखकर राघव को भी प्रसन्नता हुई। फिर श्री राम को साथ लेकर वह अपने पुरी किष्किन्धा गया। ॥२२॥

जगामागर्जदनुजो वालिनो वेगतो गृहात् ।
तदा वाली निर्जगाम तं वालिनमथाहवे ॥ २३॥

वहाँ बालि के छोटे भाई (सुग्रीव) ने घोर गर्जना की जिसको सुनकर बालि बड़े वेग से घर से बाहर निकला। ॥२३॥

निहत्य राघवो राज्ये सुग्रीवं स्थापयत्ततः ।
हरीनाहूय सुग्रीवस्त्वाह चाशाविदोऽधुना ॥ २४॥

फिर राघव (श्रीराम) ने उसे (बालि को) मार गिराया और सुग्रीव को (किषकिन्धा के) राज्य पर सिंहासनारूढ़ किया। तदन्तर सुग्रीव ने वानरों को बुलवाकर कहा, 'हे वानर वीरों! आप लोग सभी दिशाओं के ज्ञाता हैं (यानि कि सब तरफ की बातें जानते हैं, कारण आप सब तरफ विचरते रहते हैं और पृथ्वी के हर कोने में रहते हैं और वहाँ से पधारे हैं) ॥२४॥

आदाय मैथिलीमद्य ददताश्वाशु गच्छत ।
ततस्ततार हनुमानब्धिं लङ्कां समाययौ ॥ २५॥

इस समय शीघ्र यहाँ से जाओ और मिथलेश कुमारी (सीता) को आज ही दूर कर लाकर इनको (राम को) दे दो (अर्पित कर दो) | इस आदेश पर सब वानर विभिन्न दिशाओं में चल पड़े और हनुमान ने समुद्र लांघकर लंका में प्रवेश किया। ॥२५॥

सीतां दृष्ट्वाऽसुरान्हत्वा पुरं दग्ध्वा तथा स्वयम् ।
आगत्य रामेण सह न्यवेदयत तत्त्वतः ॥ २६॥

वहाँ उन्होंने सीता को देखा, अनेक असुरों (राक्षसों) का वध किया तथा लंका को जला डाला। फिर राम के पास आकर सारा समाचार यथावत् उन्हें सुना दिया। ॥२६॥

तदा रामः क्रोधरूपी तानाहूयाथ वानरान् ।
तैः सार्धमादायास्त्राणि पुरीं लङ्कां समाययौ ॥ २७॥

तब राम ने क्रोध रूप धारण किया, सब वानरों को इकट्ठा किया और अस्त्र-शस्त्र लेकर उनके साथ लंकापुरी पहुँचे। ॥२७॥

तां दृष्ट्वा उदधीशेन सार्धं युद्धमकारयत् ।
घटश्रोत्रसहस्राक्षजिद्भ्यां युक्तं तमाहवे॥ २८॥

हत्वा बिभीषणं तत्र स्थाप्याथ जनकात्मजाम् ।
आदायाङ्कस्थितां कृत्वा स्वपुरं तैर्जगाम सः ॥ २९॥

उन्होंने लंका का भलीभांति निरीक्षण किया और वहाँ के राजा (रावण) के साथ युद्ध छेड़ दिया। उस युद्ध में रावण के भाई कुंभकर्ण तथा पुत्र इंद्रजीत के सहित रावण को मार कर उन्होंने विभीषण को राजा बनाया और फिर जनकनंदिनी सीता जी को अपनी बाईं तरफ बैठाकर सब वानरों के साथ उन्होंने अपनी पुरी (अयोध्या) के लिए प्रस्थान किया। ॥२८-२९॥

ततः सिंहासनस्थः सन् द्विभुजो रघुनन्दनः ।
धनुर्धरः प्रसन्नात्मा सर्वाभरणभूषितः ॥ ३०॥

राज्य अभिषेक के बाद वह सिंहासन पर विराजमान हैं। वे दो हाथों वाले रघुनन्दन धनुष धारण किये हैं, प्रसन्न आत्मा हैं एवं सब प्रकार के आभूषणों से अलंकृत हैं। ॥३०॥

मुद्रां ज्ञानमयीं याम्ये वामे तेजप्रकाशिनीम् ।
धृत्वा व्याख्याननिरतश्चिन्मयः परमेश्वरः ॥ ३१॥

उनका दाहिना हाथ ज्ञानमयी मुद्रा में तथा बायाँ ताथ तेज को प्रकाशित करने वाली मुद्रा में स्थित है। वे निरत चिन्मय परमेश्वर उपदेश (देने) की मुद्रा में स्थित हैं। ॥३१॥

(१) ज्ञानमयी मुद्रा- दहिने हाथ की तर्जनी और अंगूठों को सटकार आगे छाती पर रखें तथा बांये हाथ को घुटने पर रखें।

(२) धनुर्मयी मुद्रा- बांये हाथ की मध्यमा अंगुली के आगे के भाग को तर्जनी अंगुली से सटा दें तथा अनामिका एवं कनिष्टा को अंगूठे से दबायें। फिर उसको बांये कन्धे पर रखें।

(३) उपदेश मुद्रा- दहिने हाथ के अंगूठे को तर्जनी अंगुली से

उदग्दक्षिणयोः स्वस्य शत्रुघ्नभरतौ ततः ।
हनूमन्तं च श्रोतारमग्रतः स्यात्लिकोणगम् ॥३२॥

श्री राम के उत्तर में शत्रुघ्न एवं दक्षिण में भरत स्थित हैं। हनुमान जी हाथ जोड़कर श्रोता की तरह सामने खड़े हैं। वे भी त्रिकोण के अन्दर ही स्थित हैं। ॥३२॥

भरताधस्तु सुग्रीवं शत्रुघ्नाधो बिभीषणम् ।
पश्चिमे लक्ष्मणं तस्य धृतच्छ्त्रं सचामरम् ॥ ३३॥

भरत के नीचे सुग्रीव तथा शत्रुघ्न के नीचे विभीषण खड़े हैं। पश्चिम की तरफ लक्ष्मण हाथ में छत्र, चँवर लिए खड़े हैं। ॥३३॥

तदधस्तौ तालवृन्तकरौ त्र्यस्रं पुनर्भवेत् ।
एवं षट्कोणमादौ स्वदीर्घाङ्गैरेष संयुतः ॥ ३४॥

दोनों भाई , भरत और शत्रुघन हाथ में ताड़ का पंखा लिए खड़े हैं। इस प्रकार तो त्रिकोण बने – पहला त्रिकोण लक्ष्मण – भरत- शत्रुघन और दूसरा हनुमान- सुग्रीव- विभीषण। इस प्रकार दो त्रिकोण से एक षटकोण बना। श्रीराम का पहला आवरण उनका दीर्घ बीज मन्त्र रूपी अक्षर हैं। ॥३४॥

यह हुआ प्रथम आवरण और उसके बीज मंत्र है – रां, रीं, रूँ, रैं, रौं, रः ।

द्वितीयं वासुदेवाद्यैराग्नेयादिषु संयुतः ।
तृतीयं वायुसूनुं च सुग्रीवं भरतं तथा ॥ ३५॥

श्री राम के द्वितीय आवरण हैं – वासुदेव, शांति, संकर्षण, श्री, प्रद्युम्न, सरस्वती, अनिरुद्ध और राति। यह क्रमशः उनके आग्नेय आदि दिशाओं में स्थित है। इस द्वितीय आवरण में श्री राम सबसे संयुक्त

संयुक्त (जुड़े हुए, सम्मिलित) रहते हैं। तृतीय आवरण में हनुमान, सुग्रीव, भरत। ॥३५॥

बिभीषणं लक्ष्मणं च अङ्गदं चारिमर्दनम् ।
जाम्बवन्तं च तैर्युक्तस्ततो धृष्टिर्जयन्तकः ॥ ३६॥

विजयश्च सुराष्ट्रश्च राष्ट्रवर्धन एव च ।
अशोको धर्मपालश्च सुमन्त्रश्चैभिरावृतः ॥ ३७॥

विभीषण, लक्ष्मण, अंगद, जामवंत एवं शत्रुघ्न हैं अर्थात जब श्री राम इन सबसे संयुक्त होते है तो तीसरा आवरण सिद्ध होता है। इनके अलावा धृष्टि, जयंत, विजय, सुराष्ट, राष्ट्रवर्धन, अकोप, धर्मपाल और सुमन्त्र से आवृत्त होने पर भी तीसरा ही आवरण बनता है। ॥३६-३७॥

ततः सहस्रदृग्वह्निर्धर्मज्ञो वरुणोऽनिलः ।
इन्द्वीशधात्रनन्ताश्च दशभिश्चैभिरावृतः ॥ ३८॥

जब श्री राम इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, चंद्रमा, ईशान, ब्रहम तथा अनंत – इन दस दिक्पालों से जब वह आवृत होते हैं तब चौथा आवरण बनता है। ॥३८॥

दस देवताओं की इन कोणों में पूजा करनी चाहिए

१. इन्द्र की पूर्व में,
२. अग्नि की दक्षिण पूर्व में,
३. यम की दक्षिण में

४. नैऋति की दक्षिण-पश्चिम में
५. वरुण की पश्चिम में
६. वायु की उत्तर-पश्चिम में
७. चंद्रमा की उत्तर में
८. ईशान की उत्तर पूर्व में
९. ब्रहम की पूर्व एवं उत्तर पूर्व के बीच में
१०. अनंत की पश्चिम एवं दक्षिण पश्चिम के बीच में

इन देवताओं के क्रमश: हैं – लं, रं, मं, क्षं, वं, यं, सं, हं,आं, नं ।

पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम के बीच में पूजा करनी चाहिए। (ख) इन देवताओं के बीज-मन्त्र

बहिस्तदायुधैः पूज्यो नीलादिभिरलङ्कृतः ।
वसिष्ठवामदेवादिमुनिभिः समुपासितः ॥ ३९॥

इन दस दिक्पालों के बाहर की तरफ इनके हथियार (आयुध) है, जो पांचवें आवरण को बनाते हैं। इन सबके द्वारा आवरत श्रीराम पूजनीय होते हैं (यानि इनके द्वारा पूजित होते हैं) इसके बाद उसी आवरण में नील आदि वानर, विशिष्ट, वामदेव आदि ऋषिगण सुशोभित होते हैं। ॥३९॥

इन दस देवताओं के दस हथियार हैं

१. इन्द्र का वज्र
२. अग्नि कि शक्ति
३. यम का दंड

४. नैऋति का खंग
५. वरुण का पाश
६. वायु का अंकुश
७. चंद्रमा की गदा
८. शिव जी का त्रिशूल
९. ब्रह्मा जी का कमल
१०. विष्णु जी का चक्र

## राम के पूजा यन्त्र के बनाने का निर्देश

एवमुद्देशतः प्रोक्तं निर्देशस्तस्य चाधुना ।
त्रिरेखापुटमालिख्य मध्ये तारद्वयं लिखेत् ॥ ४०॥

इस प्रकार संक्षेप में पूजा यंत्र का वरना किया गया। अब उसको बनाने का पूर्ण निर्देश किया जाता है। सम रेखाओं का दो सम त्रिकोण बनाकर उनके बीच दो प्रणव अक्षरों (ॐ ओम्) का उल्लेख करें। ॥४०॥

तन्मध्ये बीजमालिख्य तदधः साध्यमालिखेत् ।
द्वितीयान्तं च तस्योर्ध्वं षष्ठ्यन्तं साधकं तथा ॥ ४१॥

फिर उन दोनों प्रणव अक्षरों के बीच आद्यबीज रां को लिख कर उसके नीचे 'साध्य कार्य' को लिखें साध्य का नाम द्वितीयान्त होना चाहिए। आद्यबीज रां के ऊपरी भाग में साधक का नाम लिखना चाहिए जो षष्टयन्त रहना चाहिए। ॥४१॥

कुरु द्वयं च तत्पार्श्वे लिखेद्बीजान्तरे रमाम् ।

तत्सर्वं प्रणवाभ्यां च वेष्टयेच्छुद्धबुद्धिमान् ॥ ४२॥

इसके बाद जिन मंत्र के दोनों तरफ अर्थात बाएं और दायें 'कुरु' शब्द लिखे। बीज मंत्र के बीचों-बीच श्री-बीज 'श्रीं' लिखे। बुद्धिमान पुरुष यह सब ऐसे लिखे जिससे प्रणव -ॐ से संपुटित रहे। ॥४२॥

दीर्घभाजि षडस्रे तु लिखेद्बीजं हृदादिभिः ।
कोणपार्श्वे रमामाये तदग्रेऽनङ्गमालिखेत् ॥ ४३॥

फिर जो षट्कोण के बाहर ६ त्रिकोण बने उनमें क्रमश: (१) रा हृदयाय नमः (पहले त्रिकोण में), (२) रीं शिर से स्वाहा (दूसरे त्रिकोण में), (३) रूं शिखायै वषट् (तीसरे त्रिकोण में), (४) रें कवचाय हुम् (चौथे त्रिकोण में), (५) रौं नेत्राभ्यां वौषट् (पाँचवें त्रिकोण में), (६) र: अस्त्राय फट् (छठे त्रिकोण में) लिखें। तत्पश्चात् कोणों के एक तरफ बाहर 'रमा बीज' (श्रीं) तथा दूसरी तरफ 'माया बीज' (ह्रीं ) लिखे। फिर हर दो कोण के बीच 'काम बीज' (क्लीं ) लिखे। ॥४३॥

क्रोधं कोणाग्रान्तरेषु लिख्य मन्त्र्यभितो गिरम् ।
वृत्तत्रयं साष्टपत्रं सरोजे विलिखेत्स्वरान् ॥ ४४॥

हर त्रिकोण के नोक के बाहर एवं भीतर क्रोध बीज 'हुम्' लिखे और इस बीज के दोनों तरफ वाणी का बीज 'ऐं' लिखे। फिर तीन गोलाकार रेखाएं (वृत्त) बनाये- पहली वृत्त तो षटकोण के ऊपर हिस्से में होगा, दूसरा मध्य में होगा तथा तीसरा कमल दल के अग्र भाग में होगा। बाहर की तीसरी वृत्त के साथ आठ पत्तों वाला अष्टदल कमल बनाये। ॥४४॥

केसरे चाष्टपत्रे च वर्गाष्टकमथालिखेत् ।
तेषु मालामनोर्वर्णान्विलिखेदूर्मिसंख्यया ॥ ४५॥

जो कमल के आठ पत्ते (दल) बने उनमें क्रमशः निम्न श्रृंखला में अक्षरों को लिखे- हिन्दी वर्णमाला के 'स्वर अक्षर' को दो-दो अक्षरों को प्रत्येक कमल दल में क्रमशः लिखे (यानि कि अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, ल लु, ए ऐ ओ औ, अं अः) अब इन स्वरों के ऊपर 'व्यंजन वर्ग' के आठ वर्गों को लिखे (ये वर्ग निम्न है- क, च, ट, त, प, य, श, क्ष)। फिर इन आठों दलों में (पत्तों में) जो उपरोक्त अष्ट वर्ग लिखे गए हैं उनके ऊपर आगे बताये जाने वाले 'माला मन्त्र' के ४७ वर्णों को प्रत्येक पत्ते मे ६ करके क्रम से लिखे। ॥४५॥

अन्ते पञ्चाक्षराण्येवं पुनरष्टदलं लिखेत् ।
तेषु नारायणाष्टार्णांलिख्य तत्केसरे रमाम् ॥ ४६॥

अन्तिम (आठवें) पत्ते / दल में बचे हुए ५ वर्गों का ही जिक्र होगा (कारण ७ पत्तें में ६x७ = ४२ वर्ण आ गये हैं तो सिर्फ ४७-४२ = ५ ही बचे)। उपरोक्त आठ पत्तों वाले कमल के बाहर एक दूसरा आठ पत्तों का कमल बनाये। इसके पत्तों में 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को क्रम से हर पत्ते में लिखे। हर पत्ते के केसर (जड़) में रमा बीज मन्त्र 'श्रीं' लिखे। ॥४६॥

तद्बहिर्द्वादशदलं विलिखेद्द्वादशाक्षरम् ।
अथों नमो भगवते वासुदेवाय इत्ययम् ॥ ४७॥

पद संख्या ४६ में वर्णित आठ पत्तों वाले कमल के बाहर एक तीसरा कमल १२ पत्तों का बनाये और द्वादश अक्षर मन्त्र 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' के एक-एक अक्षर को एक-एक पत्ते में क्रमशः ऊपरी हिस्से में लिखे ॥४७॥

आदिक्षान्तान्केसरेषु वृत्ताकारेण संलिखेत् ।
तद्बहिः षोडशदलं लिख्य तत्केसरे ह्रयम् ॥ ४८॥

उपरोक्त १२ पत्तों वाले कमल के पत्तों के केसरों में हिन्दी वर्णमाला के 'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक वर्गों को (यानि कि १६ स्वर+३५व्यंजन) लिखे जो गोलाकार रूप में हो। (प्रत्येक केसर में ४ अक्षर होंगे और अन्तिम केसर में ७ अक्षर होंगे) इस कमल के बाहर की तरफ एक १६ पत्तों का चौथा कमल बनाये और उसके प्रत्येक पत्ते के केसर में माया बीज 'ह्रीं' लिखे। ॥४८॥

वर्मास्त्रनतिसंयुक्तं दलेषु द्वादशाक्षरम् ।
तत्सन्धिष्विरजादीनां मन्त्रान्मन्त्री समालिखेत् ॥ ४९॥

उस चौथे १६ पत्तों वाले कमल में हर पत्ते में ऊपर की नोक की तरफ एक-एक अक्षर क्रम से 'हुं फट न मः' तथा द्वादश मन्त्र ('ॐ ह्रीं भरताग्रज राम क्लीं स्वाहा') के एक-एक १२ अक्षरों को (कुल ४+१२-१६) लिखे। इन पत्तों के जोड़ों में (सन्धियों में) मन्त्रवेत्ता हनुमान आदि के बीज मन्त्र लिखे (जो नीचे पद संख्या ५० में वर्णित है)। ॥४९॥

ह्रं स्रं भ्रं व्रं लूमं, क्रं, ज्रं च लिखेत्सम्यक्ततो बहिः ।
द्वात्रिंशारं महापद्मं नादबिन्दुसमायुतम् ॥ ५०॥

उपरोक्त १६ बीज मन्त्र इस प्रकार हैं- हूं (हनुमान का), सं (सुग्रीव का), मुं (भरत का), वृं (विभीषण का), लू (लक्ष्मण का), शृं (शत्रुघ्न का), जूं (जामवन्त का), y (धृष्टि का), जं (जयन्ति का), विं (विजय का), सुं (सुराष्ट्र का), रां (राष्ट्रवर्धन का), अं(अकोप का), धं (धर्मपाल का), सुं (सुमन्त्र का)L मूल श्लोक में आये हुए 'च' अक्षर से इनका समुच्य होता है। इस कमल के बाहर एक पाँचवां महाकमल ३२ पत्तों का बनाये। यह 'नाद' एवं 'बिन्दु' से युक्त हो। (नाद अर्द्ध चन्द्राकार होगा और उसके ऊपर बिन्दु होगा ॥५०॥

विलिखेन्मन्त्रराजार्णांस्तेषु पत्रेषु यत्नतः ।
ध्यायेदष्टवसूनेकादशरुद्रांश्च तत्र वै ॥ ५१॥

द्वादशेनांश्च धातारं वषट्कारं च तद्बहिः ।
भूगृहं वज्रशूलाढ्यं रेखात्रयसमन्वितम् ॥ ५२॥

इस कमल के ३२ दलों (पत्तों) के केसर की तरफ इस ३२ अक्षरों वाले मन्त्र का एक-एक अक्षर क्रम से लिखे-

'रामभद्र महेश्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्तकास्माकं श्रियं दापय देहि में॥

फिर उन दलों में ८ वसु, ११ रूद्र और १२ आदित्य एवं १ वषट्कार ब्रह्मा को एक-एक करके क्रमशः लिखना चाहिए। उक्त ३२ दलों वाले कमल के बाहर की तरफ एक 'भूगृह' (भूपुर) बनाए। उसके चारों दिशाओं में (उत्तर, पश्चिम, दक्षिण, पूर्व) वन का निशान तथा ४ कोणों में शूल का चिन्ह अंकित करे। उपरोक्त 'भूपुर' को तीन रेखाओं से घेरे ॥५१-५२॥

(१) ८ वसु हैं- ध्रुव, धर, सोम, आप, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास

(२) ११ रूद्र हैं- हर, बहुरूप, त्र्यम्बक, अपराजित, शम्भु, वृषाकपि, कपर्दी, रैवत, मृगब्याध, शर्व, कपाली (३) १२ आदित्य ये हैं- धाता, अर्यमा, मित्र, वरूण, अंश, भग, इन्द्र, विवस्वान, पूषा, पर्जन्य, त्वष्टा तथा विष्णु।

(४) कुल नामों की संख्या ८+११+१२+१=३२ हुई।

(५) भूपुर यन्त्र के बाहर की तीन रेखायें सत, रज, तम गुणों को बताती हैं। भूपुर यन्त्र का लक्षण निम्न है- चौकोर रेखा, वज्र का चिन्ह और पीला रंग।

द्वारोपतं च राश्यादिभूषितं फणिसंयुतम् ।
अनन्तो वासुकिश्चैव तक्षः कर्कोटपद्मकः ॥ ५३॥

महापद्मश्च शङ्खश्च गुलिकोऽष्टौ प्रकीर्तिताः ।
एवं मण्डलमालिख्य तस्य दिक्षु विदिक्षु च ॥ ५४॥

जैसे किसी मण्डप में दरवाजे होते हैं उसी प्रकार इस चौकोर ज्योति मण्डप में भी द्वार बनाये। फिर उस भूपुर यन्त्र को १२ राशियों से विभूषित करेL(प्रत्येक द्वार के दोनों तरफ एक-एक राशि होगी।४ दरवाजे ४२ = ८ एवं ४ कोनों में ४ राशि =-८+४ = कुल १२ राशि हुई)। फिर इस चित्र को सर्प (फणि) के फण से संयुक्त करे- यानि कि ऐसा प्रदर्शित करे कि इस यन्त्र को शेषनाथ ने धारण कर रखा

है। आठ नागों के नाम ये हैं- अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक ॥५३-५४॥

(१) उपरोक्त बारह राशियों ये हैं- मीन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिका, धनुष, मकर, कुम्भ।

नारसिंहं च वाराहं लिखेन्मन्त्रद्वयं तथा ।
कूटो रेफानुग्रहेन्दुनादशक्त्यादिभिर्युतः ॥ ५५॥

इस प्रकार भूपूर यंत्र बनाकर उसके चारों दिशाओं में (उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम) दोनों मंत्रों 'नारसिंह' के बीज मंत्र को लिखें तथा कोणों में 'वाराह' की बीज मंत्र को लखें। यह जो नारसिंह का बीज मंत्र क्षरौं तथा क्षों है यह क, ष, र, औ, अनुस्वार, नाद तथा शक्ति से युक्त है। ॥५५॥

नरसिंह बीज मंत्र हैं - क्षरौं अथवा क्षों।
वाराह बीज मंत्र हैं - हूँ ।

यो नृसिंहः समाख्यातो ग्रहमारणकर्मणि ।
अन्त्याङ्घ्रीशवियद्बिन्दुनादैर्बीजं च सौकरम् ॥ ५६॥

यह नारसिंह बीज मन्त्र ग्रह बाधा निवारण तथा शत्रुमारण कर्म में विशेष रूप से प्रसिद्ध है। जो वाराह बीज है वह अन्त्य वर्ण -हकार- ह, उकार से युक्त हो , उसमें बिन्दु अर्थात अनुस्वार लगा हो, नाद अर्थात अर्ध चंद्राकार और शक्ति का भी संयोग हो 'हुम' अथवा 'हुँ' बीज बना। ॥५६॥

हुंकारं चात्र रामस्य मालमन्त्रोऽधुनेरितः ।
तारो नतिश्च निद्रायाः स्मृतिर्भेदश्च कामिका ॥ ५७॥

यह हुंकार बीज यन्त्र के कोणों में रखना चाहिए। अब राम के 'माला मन्त्र बीज' का वर्णन किया जा रहा है। इसमें प्रथम अक्षर 'तार' है अर्थात प्रणव है फिर 'नमः' पद है। इसके बाद निद्रा (भ), स्मृति (ग), मेद (व, कमिका (त) पद।॥५७॥

रुद्रेण संयुता वह्निमेधामरविभूषिता ।
दीर्घा क्रूरयुता ह्लादिन्यथो दीर्घसमायुता ॥ ५८॥

जो रुद्र (ए) से युक्त है। इसके बाद अग्नि (र), मेधा (घ) है, जो अमर (उ) से विभूषित है। इसके बाद दीर्घ कला (न) जो अक्रूर अर्थात सौम्यता चंद्रमा (अनुस्वार) से संयुक्त है। फिर ह्लादिनी (द) है, फिर दीर्घ कला (न) है , जो मानदा कला (आ) से सुशोभित है। ॥५८॥

क्षुधा क्रोधिन्यमोघा च विश्वमप्यथ मेधया ।
युक्ता दीर्घज्वालिनी च सुसूक्ष्मा मृत्युरूपिणी ॥ ५९॥

इसके बाद क्षुधा (य) है। (इस प्रकार पद संख्या ५७ से यहाँ तक 'रघुनन्दनाय' बना।) तदन्तर क्रोधिनी (र), अमोघा (क्ष) और विश (ओ) है को मेधा (घ) से संयुक्त है। फिर दीर्घा (न), ज्वालिनी (व), जो सूक्ष्म रुद्र (इ) से युक्त है। फिर मृत्यु प्रणव कला (श) है। ॥५९॥

सप्रतिष्ठा ह्लादिनी त्वक्क्ष्वेलप्रीतिश्च सामरा ।
ज्योतिस्तीक्ष्णाग्निसंयुक्ता श्वेतानुस्वारसंयुता ॥ ६०॥

जो उच्चारण के आधार स्वरूप (यानि कि प्रतिष्ठा स्वरूप) 'अ' से संयुक्त है। इसके बाद ह्लादिनी (दा) तथा त्वक (य) है। इसके मंत्र का आगे का हिस्सा ' रक्षोघ्नविशंदाय' बना। इसके बाद क्षवेल (म), प्रीति (ध), अमर(उ), ज्योति(र) , तीक्ष्णा (प्), जो अग्नि (र) से संयुक्त है। इसके बाद श्ववेता (स) है जो अनुस्वार (ं) है। (अतः बीज मन्त्र निम्न बने म धु र पृ सं) ॥६०॥

कामिकापञ्चमूलान्तस्तान्तान्तो थान्त इत्यथ ।
स सानन्तो दीर्घयुतो वायुः सूक्ष्मयुतो विषः ॥ ६१॥

फिट कामिका (अर्थात त) से पाँचवाँ अक्षर 'न', 'ल' के बाद अक्षर 'व', 'त' के बाद वाले अक्षर के पीछे का अक्षर 'द', फिर 'ध' के बाद का अक्षर 'न' जो अनन्त (आ) से संयुक्त हैं। दीर्घ स्वर से युक्त वायु (या) सूक्ष्म 'इ' कार से युक्त विष मकार (मि) है। इस प्रकार अक्षर बने न व द ना या मि। ॥६१॥

कामिका कामका रुद्रयुक्ताथोऽथ स्थिरातपा ।
तापनी दीर्घयुक्ता भूरनलोऽनन्तगोऽनिलः ॥ ६२॥

इसके बाद कामिका (त) और इसमें रुद्र (ए) का संयोग है। तदन्तर स्थिरा (ज), उसके बाद अक्षर 'स' है और उसमें 'ए' की मात्र है। इस प्रकार 'मधुरप्रसन्नवदनायमिततेजसे' यह मंत्र भाग बना। ॥६२॥

नारायणात्मकः कालः प्राणाभो विद्यया युतः ।
पीतारातिस्तथा लान्तो योन्या युक्तस्ततो नतिः ॥ ६३॥

फिर नारायणात्मक 'रा? के साथ 'काल' (यानि कि आ+म = मा) है। इसके बाद 'प्राण' (य) है। इससे 'रामाय' शब्द बना।

इसके बाद 'विद्यायुक्त अम्भस्', यानि कि इ+व = वि है। फिर पीता (ष), रति (ण) और 'ल' के बाद का अक्षर 'व' है जो योनि (ए) से युक्त है। इससे मन्त्र का अगला शब्द 'विष्णवे' बना। अन्त में नति–प्रणाम का वाचक शब्द 'नमः' और 'प्रर्णव' है । ॥६३॥

(ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुर प्रसन्नवदनाय मिततेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः)

सप्तचत्वारिंशद्वर्णगुणान्तःस्पृङ्नुः स्वयम् ।
राज्याभिषिक्तस्य तस्य रामस्योक्तक्रमाल्लिखेत् ॥ ६४॥

'ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुर प्रसन्नवदनाय मिततेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः ॐ।'

यह ४७ अक्षरों का 'माला मन्त्र' है। यह राज्य पर अभिषिक्त श्रीराम से सम्बन्ध रखता है। सगुण श्रीराम का मन्त्र होने पर भी यह भक्तों के त्रिगुणमयी माया के बन्धन का नाश करने वाला है एवं उन्हें साकेत धाम देता है। इस मन्त्र को पहले बताये हुए क्रम से लिखना चाहिए (कृपया पद संख्या ४५ देखें) ॥६४॥

माला मन्त्र का वर्णन पद संख्या ५६-६३ में हुआ और यह पद संख्या ४५ में जो कमल दल है उसके अन्दर ऊपर की तरफ पद संख्या ४५ में बताये तरीके से लिखा जायेगा।

इदं सर्वात्मकं यन्त्रं प्रागुक्तमृषिसेवितम् ।
सेवकानां मोक्षकरमायुरारोग्यवर्धनम् ॥ ६५॥

यह राम का यन्त्र सर्वदेव पूज्यात्मक है- अर्थात् सभी प्रधान देवता बीज रूप में इसमें मौजूद हैं। इसका उपदेश प्राचीन आचार्यों ने किया है तथा ऋषियों ने भी इसका सेवन करने मोक्ष प्रपात किया है। यह मोक्ष देता है एवं आयु तथा आरोग्य में वृद्धि करता है। ॥६५॥

अपुत्राणां पुत्रदं च बहुना किमनेन वै ।
प्राप्नुवन्ति क्षणात्सम्यगत्र धर्मादिकानपि ॥ ६६॥

यह पुत्रहीनों को पुत्र प्राप्ति कराता है। ज्यादा क्या कहना, इस मन्त्र के सेवन से मनुष्य से सब कुछ शीघ्र पा जाता है। इसका आश्रय लेकर उपासक धर्म, ज्ञान, वैराग्य एवं ऐश्वर्य सब पा लेता है ॥६६॥

इदं रहस्यं परममीश्वरेणापि दुर्गमम् ।
इदं यन्त्रं समाख्यातं न देयं प्राकृते जने ॥ ६७॥

यह अत्यन्त गोपनीय रहस्य है। यह यन्त्र बिना उपदेश के परम सामर्थ्यशाली पुरूष के लिए भी दुर्गम है। प्राकृतजनों को इसका उपदेश नहीं देना चाहिए। ॥६७॥

॥ इति रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् तृतीय सर्ग ॥ ॥३॥

श्रीरामपूर्वतापिनीयोपनिषद् का तृतीय सर्ग समाप्त हुआ।

॥ श्री हरि ॥

# ॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

## ॥ पंचम सर्ग ॥

### पञ्चमोपनिषद् पूजा की सविस्तार विधि

ॐ भूतादिकं शोधयेद्द्वारपूजां कृत्वा पद्माद्यासनस्थः प्रसन्नः ।
अर्चाविधावस्य पीठाधरोर्ध्वपार्श्वार्चनं मध्यपद्मार्चनं च ॥ १॥

साधक सर्वप्रथम द्वारा पूजा करे। फिर पद्मासन से बैठे। इसके बाद पञ्चभूत आदि की शुद्धि करे (प्राण प्रतिष्ठा एवं मातृकान्यसका पञ्चभूत शुद्धि का लक्षण है।) श्रीराम के यंत्र के पूजन में सिंहासन पीठ के अधोभाग (नीचे के भाग), ऊर्ध्व भाग (ऊपर का भाग) एवं पार्श्व भाग (दोनों तरफ) में देवपूजन करने का विधान है। पीठ के ऊपर मध्य भाग में जो आठ दल का कमल है, उसका भी पूजन करे। (यह राम यंत्र की पहली और दूरी कमलों की पंक्तियाँ हैं।) ॥१॥

१. द्वार पूजा की विधि :- आचार्य स्नान करके संध्या वंदन आदि नित्य नियम करके, वस्त्र और माला आदि से अलंकृत हो पूजन करने के लिए मौन भाव से यज्ञ मण्डप में पदार्पण करे। वह आचमन करके पूजा के लिए अर्घ्य बनाकर रख ले। फिर मंत्र युक्त जल से द्वार का अभिषेक करके उसका पूजन आरम्भ करे। द्वार के ऊपरी भाग में गूलर की लकड़ी

हो; उसमें विघ्ना, लक्ष्मी तथा सरस्वती का आह्वान पूजन करे। (मंत्र इस प्रकार क्रमशः हैं- विं विघ्नाय नमः, लं लक्ष्म्यै नमः, सं सरस्वत्यै नमः) इसके बाद द्वार के दक्षिण शाखा में विघ्न का और बांयी शाखा में क्षेत्रपाल का पूजन करे। इन दोनों के बगल में क्रमश: गंगा-यमुना का फूल और जल से पूजन करे- दक्षिण द्वार में गंगा का और बांये द्वार में यमुना का पूजन करना उचित है तत्पश्चात् द्वारा के निचले भाग में देहली पर 'अस्त्राय फट्' का उच्चारण करते हुए अस्त्र-शस्त्र की पूजा करे यही क्रम हर द्वार की पूजा में करे।

२. पद्मासन में बैठने की विधि :- बांयी जांघ पर दहिना चरण रखे और दांयी जांघ पर बांया चरण रखे। पीठ सीधी हो। भगवान् की पूजा करने के लिए दोनों हाथ खाली रखना जरूरी है।

३. भूत-शुद्धि :--(क) अपने शरीर में पैरों से लेकर घुटनों तक का भाग पृथ्वी का स्थान माना जाता है। यह स्थान चौकोर, वज्र के चिन्ह से युक्त और पीत वर्ण है। इसका बीज मंत्र 'लं' हैL(ख) घुटनों से लेकर नाभि तक के भाग को जल का स्थान मानकर यह विचार करे कि इसका आकृति अर्धचन्द्र के समान और शुक्ल वर्ण है। इसमें कमल का चिन्ह है। इसका बीज मंत्र 'वं' है।(ग) नाभि से लेकर कण्ठ तक के भाग को अग्नि मण्डल समझे। यह त्रिकोण आकार का है, वर्ण लाल है, इसमें स्वास्तिक का चिन्ह है और '' बीज मंत्र है।(घ) कण्ठ से ऊपर भौहों के मध्य तक का भाग वायु मण्डल है। है, इसमें स्वास्तिक का चिन्ह है और '' बीज मंत्र है। (घ) कण्ठ से ऊपर भौहों के मध्य तक का भाग वायु मण्डल है। इसकी

आकृति षट्कोण है, वर्ण कृष्ण है, इसमें ६ बिन्दु चिन्हित है और इसका बीज मंत्र 'य' है। (ङ) भौहों के मध्य से लेकर मस्तिष्क के बीच तक का भाग आकश मण्डल है। इसकी आकृति गोल, रंग धुएं के समान, ध्वज का चिन्ह और इसका बीज मंत्र 'हं' है। इस प्रकार चिन्तन करते हुए इन पाँचों भूतों को निम्न क्रम से लय करे- पृथ्वी को जल में, जल को अग्नि में, अग्नि को वायु में, वायु को आकाश में तथा आकाश को अव्यक्त प्रकृति में लय करे। यह प्रकृति ही परमब्रह्म का रूप है, यह माया भी कहलाती है। इस माया को परमात्मा में लय करे। इस प्रकार समस्त देह के प्रपञ्चों को परमात्मा में लय करके परमात्वा स्वरूप हो जाये- यानि कि अपने में परमात्मा में कोई भिन्नता न देखे। इस प्रकार की भावना को ही भूत-शुद्धि कहा गया है।

४. प्राण-प्रतिष्ठा :- प्राण-प्रतिष्ठा करते समय यह भावना करनी चाहिए कि भगवत् विग्रह में प्राण संचार हो रहा है एवं जीवात्मा रूप से भगवान स्वयं विराजमान हो रहे हैं। इसके लिए भगवान् की प्रतिमा अथवा यंत्र पर हाथ रखकर मंत्रों का उच्चारण करे।]

कृत्वा मृदुश्लक्ष्णसुतूलिकायां रत्नासने देशिकमर्चयित्वा ।
शक्तिं चाधाराख्यकां कूर्मनागौ पृथिव्यब्ज स्वासनाधः प्रकल्प्य ॥२॥

पूजा पीठ, जिस पर यंत्र रखा गया है, के बाहर, नीचे बांयी तरफ एक रत्न सिंहासन पर मुलायम, चिकनी तथा सिंहासन के आकार की रूईदार गद्दी होने की भावना करे। उस पर अपने आचार्य की

भगवत् स्वरूप समझकर पूजा करे। पीठ के नीचे अपने आराध्य देव (श्रीराम) के आसन के नीचे आधार शक्ति, कूर्म (कच्छप) की, नाग (शेषनाथ) की तथा पृथ्वी के ऊपर २ कमलों की पूजा करनी चाहिए। ॥२॥
आधार शक्ति का ध्यान देवी के रूप में करके पूजा करनी चाहिए। उनका मंत्र 'आधार शक्ति नमः' है। कूर्म की पूजा 'कूर्माय नमः' से, शेषनाथ की पूजा 'शेषाय नमः' से एवं कमल की पूजा 'कमलाय नमः' मंत्रों से होती है।

विघ्नेशं दुर्गां क्षेत्रपालं च वाणीं बीजादिकांश्चाग्निदेशादिकांश्च ।
पीठस्याङ्घ्रिष्वेव धर्मादिकांश्च नत्वा पूर्वाद्यासु दीक्ष्वर्चयेच्च ॥ ३॥

विघ्न, दुर्गा, क्षेत्रपाल तथा वाणी का इनके नाम से पहले बीज लगाकर चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग करते हुए पूजन करना चाहिए। यानि कि विघ्न का 'ॐ विं विघनाय नमः ' से दक्षिण पूर्व कोण में दुर्गा का 'ॐ दुं दुर्गाय नमः' से दक्षिण-पश्चिम कों में क्षेत्रपाल का 'ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः' से उत्तर-पश्चिम कों में एवं वाणों का 'ॐ वां वाण्यै नमः" से उत्तर-पूर्व कोण में पूजा करें। फिर पीठ ने चारों कोणों में स्थित पायों में उसी प्रकार क्रमशः धर्म, काम, मोक्ष का पूजन करे। इसके बाद पीठ के चारों दिशाओं में (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर) क्रमशः अधर्म, अनर्थ, अकाम, अमोक्ष का पूजन करे। ॥३॥

धर्म का रंग लाल है वह वृषभ रूप में है। अर्थ का अर्थ सांवला है, वह सिंह रूप में है। काम का रंग पीला है, वह भूत रूप में है। मोक्ष का रंग नीला है, वह हाथी के आकर का है। अंतः पीठ के चारों पायों में यह आकृतियाँ अंकित करें।

मध्ये क्रमादर्कविध्वग्नितेजांस्युपर्युपर्यादिमैरर्चितानि ।
रजः सत्वं तम एतान् वृत्तत्रयं बीजाढ्यं क्रमाद्भावयेच्च ॥ ४॥

इसके बाद कमल के मध्य से पूजन आरम्भ करे। यंत्र के ऊपर मध्य भाग में सूर्य, चन्द्र और अग्नि का पपोजन करे। यंत्र में बीज सहित जो तीन वृत हैं उन्हे सत्व, रज, तं गुणों का प्रतीक मानकर उनका चिंतन एवं पूजन करना चाहिए। ॥४॥

पूजन के मंत्र हैं –

(१) ॐ सं सत्वाय नमः
(२) ॐ रं रजसे नमः
(३) ॐ तं तमसे नमः

आशाव्याशास्वप्यथात्मानमन्तरात्मानं वा परमात्मानमन्तः ।
ज्ञानात्मानं चार्चयेत्तस्य दिक्षु मायाविद्ये ये कलापारतत्त्वे ॥ ५॥

तत्पश्चात जो अष्टदल कमल (८ पत्तों वाले दो कमल) यंत्र के मध्य में हैं, उन दलों के पहले चार कोणों में फिर चार दिशाओं में पूजन करे। कोणों में दक्षिण-पूर्व कोने में आत्मा (लिंग), दक्षिण-पश्चिम कोने में अन्तर्रात्मा (जीव), उत्तर-पश्चिम कोने में परमात्मा (ईश्वर) एवं उत्तर-पूर्व कोने में ज्ञानात्मा (लीला पुरूषोत्तम) का पूजन करे। फिर पूर्व में माया तत्व, दक्षिण में विद्या तत्व, पश्चिम में कला तत्व और उत्तर में पर तत्व का पूजन करे। ॥५ ॥

(१) कोनों में पूजा मंत्र क्रमशः निम्न हैं— (क) ॐ आत्मने नमः, (ख) ॐ अन्तरात्मे नमः (ग) ॐ परमात्मने नमः एवं (घ) ॐ ज्ञानात्मने नमः।

(२) दिशाओं में पूजा के मंत्र क्रमशः निम्न हैं--(क) ॐ मायातत्त्व नमः, (ख) ॐ विद्यातत्त्व नमः (ग) ॐ कलातत्त्व नमः एवं (घ) ॐ परतत्त्वाय नमः।

सम्पूजयेद्विमलादीश्च शक्तीरभ्यर्चयेद्देवमवाहयेच्च ।
अङ्गव्यूहानिलजाद्यैश्च पूज्य घृष्ट्यादिकैर्लोकपालैस्तदस्त्रैः ॥ ६॥

इसके बाद पूजा क्रम में विमला आदि शक्तियों की पूजा करे। फिर प्रधानदेव (श्रीराम) का आह्वान एवं पूजन करे। इसके बाद देव (श्रीराम) के अंगों का जल आदि से पूजन करे। फिर अनिल (हनुमान) प्रभृति की पूजा करे। इसके बाद धृष्टि आदि आठ मंत्रीगण एवं लोकपाल और उनके अस्त्रगणों का पूजन करे (६)

१. शक्तियाँ हैं- विमला, उत्कर्षिणी, ज्ञाना, क्रिया, योगा, प्रह्वी, सत्या, ईशाना और अनुग्रह। इनके स्थान अष्टदल कमल के केसर में हैं। ये वर देना एवं अभय मुद्रा में है।

२. राम के आह्वान एवं पूजन का मंत्र ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय नमः ॐ है। जिसका वर्णन पिछले सर्ग नं० ४ के पद संख्या ६३ में विस्तार से हुआ है।

३. देव श्रीराम के अंग पूजा में मस्तक, हृदय, हाथ, पैर इत्यादि का जल से अभिषेक का विधान है।

४. मंत्रीगण हैं- ध्रष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्धन, अकोप, धर्मपाल, सुमन्त्र । कृपया सर्ग संख्या ४, पद संख्या ३५-३७ देखें।

५. लोकपाल हैं-- इन्द्र, यम, निरूति, वरुण, वायु, चन्द्रमा, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त (विष्णु)। कृपया सर्ग संख्या ४, पद संख्या ३८ देखें।

६. हनुमान प्रभृति सेवक हैं- हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शतुघ्न, सुग्रीव, विभीषण, अंगद, जामवंत । कृपया सर्ग संख्या ४, पद संख्या ३४, ३५-३६ देखें।

७. अस्त्र हैं- वज्र, शक्ति, दण्ड, खंग, पाश, अंकुश, गदा, शूल, चक्र, पद्म। कृपया सर्ग संख्या ४, पद संख्या ३९ देखें।

वसिष्ठाद्यैर्मुनिभिर्नीलमुख्यैराराधयेद्राघवं चन्दनाद्यैः ।
मुख्योपहारैर्विविधैश्च पूज्यैस्तस्मै जपादींश्च सम्यक्प्रकल्प्य ॥ ७॥

इसके बाद वशिष्ठ आदि ऋषियों और नील आदि वानरों से घिरे हुए राघव (श्री राम) का चंदन एवं श्रेष्ठ उपहारों से आराधना करे। फिर जप आदि भी उन्हे समर्पित कर दे। ॥७॥

१. ऋषियों के नाम निम्न हैं – वशिष्ठ, वामदेव, जाबाल, गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, वाल्मीकि, नारद, सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार।

२. वानरों के नाम हैं – नील , नल, सुषेण, मेन्द, शरभ, द्विविन्द, धनद, गवाक्ष, किरीट, कुंडल, श्रीवत्स, कौस्तुभ, शंख, चक्र, गदा, पदम। यह १६ वानर रूप हैं।

३.

४. जप समर्पण करने का मंत्र -

गुह्यादुह्यास्य गोप्तात्वं गृहाण समत्कृतं जपम।
सिद्धिरभवतु में देव तत्वप्रसादात्कृपानिधे॥

एवंभूतं जगदाधारभूतं रामं वन्दे सच्चिदानन्दरूपम् ।
गदारिशङ्खाब्जधरं भवारिं स यो ध्यायेन्मोक्षमाप्नोति सर्वः ॥ ८॥

'जो इस प्रकार की विशाल महिमा वाले हैं, जगत के आधारभूत, सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, जिनके कर-कमलों में गदा, चक्र, शंख और पद्म शोभा पा रहे हैं, जो भव बन्धन का नाश करने वाले हैं-- उन श्रीराम की मैं वन्दना करता हूँ' जो इस प्रकार कहकर भगवान श्रीराम का ध्यान करते हैं वो मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। ॥८॥

विश्वव्यापी राघवो यस्तदानीमन्तर्दधे शङ्खचक्रे गदाब्जे ।
धृत्वा रमासहितः सानुजश्च सपत्तनः सानुगः सर्वलोकी ॥ ९॥

विश्वव्यापी राघव (श्रीराम) लीला संवरण के समय सशरीर अन्तर्धान हो गए। (उन्होंने साधारण प्राणी की तरह शरीर नहीं छोड़ा) उनके आयुध- शंख, चक्र, गदा, पद्म- भी उनके साथ अन्तर्धान हो गए। उन्होंने अपने स्वाभाविक रूप को धारण कर रमा (लक्ष्मी, सीता) के

साथ परमधाम में पदार्पण (प्रवेश) किया। उस समय सारा परिवार, पुरजन, परिजन, भाई, प्रजाजन, विभीषण सहित उनके साथ परमधाम चले गए। ॥९॥

तद्भक्ता ये लब्धकामांश्च भुक्त्वा तथा पदं परमं यान्ति ते च ।
इमा ऋचः सर्वकामार्थदाश्च ये ते पठन्त्यमला यान्ति मोक्षम् ॥ १०॥

जो उनके भक्त होते हैं वे मन वाञ्छित फल एवं भोगों को पाते हैं, प्राप्त हुए भोगों का उपभोग करते हैं एवं अन्त में वे भी परमपद प्राप्त करते हैं। जो लोग सम्पूर्ण कामनाओं और अर्थों को देने वाले इन श्लोकों का पाठ करते हैं वो शुद्ध अन्त:करण वाले होकर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। ॥१०॥

॥ इति रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् पंचम सर्ग ॥ ॥३॥

श्रीरामपूर्वतापिनीयोपनिषद् का पंचम सर्ग समाप्त हुआ।

॥इति श्रीरामपूर्वतापिन्युपनिषत्समाप्ता ॥

श्री रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् समाप्त हुआ

## ॥ शांतिपाठ॥

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

गुरु के यहाँ अध्ययन करने वाले शिष्य अपने गुरु, सहपाठी तथा मानवमात्र का कल्याण-चिन्तन करते हुए देवताओं से प्रार्थना करते है कि:

हे देवगण ! हम भगवान का आराधन करते हुए कानों से कल्याणमय वचन सुनें। नेत्रों से कल्याण ही देखें। सुदृढः अंगों एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए हमलोग; जो आयु आराध्य देव परमात्मा के काम आ सके, उसका उपभोग करें।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

जिनका सुयश सभी ओर फैला हुआ है, वह इन्द्रदेव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, हमारे जीवन से अरिष्टों को मिटाने के

लिए चक्र सदृश्य, शक्तिशाली गरुड़देव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पति भी हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हमारे, अधिभौतिक, अधिदैविक तथा तथा आध्यात्मिक तापों (दुखों) की शांति हो।

ॐ तत् सत् ॥

॥ इति श्री रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् ॥

॥ श्री रामपूर्वतापिनीयोपनिषद् पूर्ण हुआ ॥

संकलनकर्ता:

**श्री मनीष त्यागी**

**संस्थापक एवं अध्यक्ष**
**श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन**

**www.shdvef.com**

**॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥**